﴾22﴿ सब अम्बिया में पहले नबी (ह़ज़रते) आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) हैं और सब से आख़िरी नबी (ह़ज़रते) मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हैं।

(الاوائل للطبرانی ص۳۹ حدیث ۱۳)

﴾23﴿ لَوْ كَانَ بَعْدِیْ نَبِیٌّ لَكَانَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ या'नी अगर मेरे बा'द कोई नबी होता तो उ़मर होते। (ترمذی ج۵ ص ۳۸۵ حدیث ۳۷۰۶)

शर्ह़े ह़दीस : इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की वज़ाह़त में फ़रमाते हैं : या'नी आप (رَضِیَ اللهُ عَنْه) की फ़ित़रत इतनी कामिल थी कि अगर दरवाज़ए नुबुव्वत बन्द न होता तो महज़ फ़ज़्ले इलाही से वोह नबी हो सकते थे कि अपनी ज़ात के ए'तिबार से नुबुव्वत का कोई मुस्तह़िक़ नहीं। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 373)

﴾24﴿ अबू बक्र अम्बिया (व मुरसलीन) के सिवा तमाम लोगों से अफ़्ज़ल हैं। (الکامل لابن عدی ج٦ ص٤٨٤)

30 झूटे नबी होंगे

﴾25﴿ अ़न्क़रीब मेरी उम्मत में 30 कज़्ज़ाब (या'नी बहुत बड़े झूटे) होंगे, उन में से हर एक गुमान (या'नी ख़याल) करेगा कि वोह नबी है ह़ालां कि मैं ख़ातमुन्नबिय्यीन (या'नी आख़िरी नबी) हूं और मेरे बा'द कोई नबी नहीं है।

(ابوداؤد ج٤ ص١٣٢ حدیث ٤٢٥٢)

शर्ह़े ह़दीस

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : येह 30 झूटे नबी वोह हैं जिन्हें लोगों ने नबी मान लिया और उन का फ़साद फैल गया, दूसरे क़िस्म के मुद्दइये नुबुव्वत (या'नी नबी

होने का दा'वा करने वाले) जिन्हें किसी ने न माना वोह बक्वास कर के मर गए, वोह तो बहुत हैं।

(मुफ़्ती साहिब मज़ीद फ़रमाते हैं :) मा'लूम हुवा कि ख़ातमुन्नबिय्यीन के मा'ना हैं **आख़िरी नबी** कि इस के ज़माने में और इस के बा'द कोई नबी न बने। इस मा'ना पर उम्मत का इज्माअ़ (या'नी इत्तिफ़ाक़) है, जो कहे : इस के मा'ना "आख़िरी नबी" नहीं बल्कि अस्ली नबी हैं, वोह काफ़िर है। (मिरआत, जि. 7, स. 219, 220 से ख़ुलासा)

﴾26﴿ मेरी उम्मत में कज़्ज़ाब व दज्जाल (इन्तिहाई झूटे और धोकेबाज़) होंगे (और) उन में से चार औ़रतें भी होंगी और मैं **आख़िरी नबी** हूं, मेरे बा'द कोई नबी नहीं। (معجم کبیر ج۳ص۱۶۹ حدیث ۳۰۲۶)

मौला अ़ली की शाने अ़ज़मत निशान

﴾27﴿ हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ज़्वए तबूक की त़रफ़ तशरीफ़ ले जाते वक़्त ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه को मदीने में छोड़ा तो आप ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे औ़रतों और बच्चों में छोड़े जाते हैं ! फ़रमाया : क्या तुम इस पर राज़ी नहीं कि तुम यहां मेरी नियाबत (या'नी नाइब होने की हैसिय्यत) में ऐसे रहो जैसे मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) जब अपने रब से कलाम के लिये ह़ाज़िर हुए तो हारून (عَلَيْهِ السَّلَام) को अपनी नियाबत (या'नी नाइब होने की हैसिय्यत) में छोड़ गए थे, हां येह फ़र्क़ है कि हारून (عَلَيْهِ السَّلَام) नबी थे, मैं जब से नबी हुवा दूसरे के लिये नुबुव्वत नहीं।

(مسلم ص۱۰۰۶ حدیث ۶۲۱۸، ترمذی ج۵ص۴۰۷ حدیث ۳۷۴۵)

शर्हे ह़दीस

शारेहे बुख़ारी ह़ज़रते मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) जब कोहे तूर पर तौरात लेने जाने लगे तो ह़ज़रते हारून (عَلَیْہِ السَّلَام) को आ़रिज़ी तौ़र पर (TEAMPRORAY) अपनी वापसी तक के लिये अपना जा नशीन बनाया था जो उन की वापसी के बा'द ख़त्म हो गया, इस तम्सील (या'नी मिसाल) ने ज़ाहिर कर दिया कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली को आ़रिज़ी तौ़र पर तबूक से वापसी तक के लिये अपना नाइब बनाया था (और) येह नियाबत भी मह़दूद थी सिर्फ़ इन्तिज़ामी मुआ़मलात तक।

(नुज़्हतुल क़ारी, जि. 4, स. 602)

28 अ़ली मुझ से ऐसे हैं जैसे मूसा से हारून (कि भाई भी हैं और नाइब भी) मगर "لَا نَبِیَّ بَعْدِیْ" मेरे बा'द कोई नबी नहीं। (تاریخ بغداد ج۷ص٤٦٣)

29 मैं मुह़म्मद, नबिय्ये उम्मी (या'नी दुन्या में किसी से पढ़े बिग़ैर पढ़ने वाला नबी) हूं (इसे तीन बार फ़रमाया) और "لَا نَبِیَّ بَعْدِیْ" मेरे बा'द कोई नबी नहीं। (مسند امام احمد ج۲ص٦٦٦حدیث ٧٠٠٠)

30 मैं ने जो कुछ चाहा **अल्लाह** पाक ने मुझे अ़त़ा फ़रमाया मगर मुझ से येह फ़रमाया गया कि तुम्हारे बा'द कोई नबी नहीं।

(السنة لابن ابی عاصم ص٣٠٣حدیث ١٣٤٨)

ऐ ख़त्मे रुसुल, मक्की मदनी
कौनैन में तुम सा कोई नहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

तू ने सच कहा

﴾31﴿ फ़रिश्ते क़ब्र में मुर्दे से सुवाल करेंगे : "तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? और तेरे नबी कौन हैं ?" वोह कहता है : मेरा रब **अल्लाह** है जिस का कोई शरीक नहीं और मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी (हज़रते) **मुहम्मद** (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हैं और वोह सब से **आख़िरी नबी** हैं। फ़रिश्ते कहते हैं : तू ने सच कहा। (ذکر الموت مع موسوعة للامام ابن ابی الدنیا ج٥ ص٤٧٤ حدیث ٢٥٤, शर्हुस्सुदूर (उर्दू), स. 130 मुख़्तसरन)

एक ख़्वाब की ता'बीर

﴾32﴿ हज़रते इब्ने ज़िम्ल رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के ख़्वाब की ता'बीर बयान करते हुए फ़रमाया : रही वोह ऊंटनी जिस को तुम ने ख़्वाब में देखा और येह कि मैं उसे चला रहा हूं तो इस से मुराद क़ियामत है, न मेरे बा'द कोई नबी होगा और न मेरी उम्मत के बा'द कोई उम्मत होगी। (دلائل النبوة للبیهقی ج٧ص ٣٨ مختصراً)

उन के आगे नूर दौड़ता होगा

﴾33﴿ बेशक **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन औरों से पहले (हज़रते) नूह (عَلَيْهِ السَّلَام) और उन की क़ौम को बुला कर फ़रमाएगा : तुम ने नूह को क्या जवाब दिया ? वोह कहेंगे : नूह (عَلَيْهِ السَّلَام) ने न हमें तेरी त़रफ़ बुलाया, न तेरा कोई हुक्म पहुंचाया, न कुछ नसीह़त की, न हां या ना का कोई हुक्म सुनाया। नूह (عَلَيْهِ السَّلَام) अ़र्ज़ करेंगे : इलाही ! मैं ने इन्हें ऐसी दा'वत दी जिस की ख़बर एक के बा'द एक सब अगलों पिछलों में फैल गई, यहां तक कि (वोह ख़बर) सब से **आख़िरी नबी** (हज़रते) अह़मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तक पहुंची,

उन्हों ने उसे लिखा और पढ़ा (या'नी क़ुरआने करीम में बयान हुवा जिसे लिखा और पढ़ा गया) और उस पर ईमान लाए और उस की तस्दीक़ फ़रमाई। **अल्लाह** पाक फ़रमाएगा : अह़मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) व उम्मते अह़मद को बुलाओ। तो **रसूलुल्लाह** (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और आप की उम्मत इस ह़ाल में **अल्लाह** पाक की बारगाह में ह़ाज़िर होंगे कि उन के आगे नूर दौड़ता होगा वोह नूह़ (عَلَيْهِ السَّلَام) की गवाही देंगे (या'नी तस्दीक़ करेंगे)।

(المستدرك ج٣ ص٤١٥ حديث ٤٠٦٦, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 690)

क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ आख़िरी नबी कहेगी

﴿34﴾ अव्वलीनो आख़िरीन मेरी ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ करेंगे : "हुज़ूर आप **अल्लाह** पाक के रसूल और ख़ातमुल अम्बिया या'नी **आख़िरी नबी** हैं, हमारी शफ़ाअ़त फ़रमाइये।" (بخاری ج٣ ص٢٦٠ حديث ٤٧١٢ ملخصاً)

يَا شَفِيْعَ الْوَرٰى سَلَامٌ عَلَيْك　　يَا نَبِيَّ الْهُدٰى سَلَامٌ عَلَيْك

خَاتَمَ الْاَنْبِيَاء سَلَامٌ عَلَيْك　　سَيِّدَ الْاَصْفِيَاء سَلَامٌ عَلَيْك

अगर मुह़म्मद न होते तो मैं तुम्हें न बनाता

﴿35﴾ (ह़ज़रते) आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) से जब ख़त़ाए इज्तिहादी हुई, तो आप ने अ़र्श की त़रफ़ अपना सरे मुबारक उठाया और **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ किया : "**या अल्लाह** पाक ! मैं तुझे मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का वासित़ा दे कर सुवाल करता हूं कि मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा।" **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आदम ! तू ने मुह़म्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को कैसे पहचाना ह़ालां कि मैं ने अभी उसे पैदा नहीं किया है ? ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام

ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** पाक ! जब तू ने मुझे अपनी कुदरत से बनाया तो मैं ने सर उठा कर देखा तो अ़र्श के पायों पर لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ लिखा हुवा देखा तो मैं ने जान लिया कि तू ने उसी का नाम अपने नामे पाक के साथ मिलाया होगा जो तुझे तमाम जहान से ज़ियादा प्यारा है और तेरे नज़्दीक उस की बड़ी इ़ज़्ज़त है। **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ आदम ! तू ने सच कहा, बेशक वोह मुझे तमाम जहान से ज़ियादा प्यारा है, जब तू ने मुझे उस का वासित़ा दे कर सुवाल किया तो मैं ने तेरी ख़त़ा मुआ़फ़ फ़रमा दी وَلَوْلَا مُحَمَّدٌ مَا خَلَقْتُكَ या'नी अगर मुह़म्मद न होते तो मैं तुम्हें न बनाता।[1] त़बरानी की रिवायत में येह इज़ाफ़ा है : और वोह तेरी औलाद में **सब से आख़िरी नबी** है और उस की उम्मत तेरी औलाद में सब से आख़िरी उम्मत है। (معجم صغیر جزء ثانی ص۸۲, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 633)

वोह जो न थे तो कुछ न था, वोह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वोह जहान की, जान है तो जहान है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب   صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾36﴿ जब ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) जन्नत से हिन्द में उतरे तो घबराए, जिब्रील ने उतर कर अज़ान दी, जब नामे पाक आया ह़ज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) ने पूछा : मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) कौन हैं ? कहा : आप की औलाद में सब से **आख़िरी नबी**।

(ابن عساکر ج۷ ص۴۳۷ مختصراً, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 640)

[1] المستدرك ج۳ ص۵۱۷ حدیث ۴۲۸۶

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** पाक उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

तौरैत शरीफ़ में ज़िक्रे ख़ैर

﴾37﴿ (ह़ज़रते) मूसा (कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام) पर जब तौरैत शरीफ़ नाज़िल हुई तो आप ने उसे पढ़ा तो उस में इस उम्मत का ज़िक्र पाया तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! मैं इस में एक उम्मत पाता हूं कि वोह ज़माने में सब से आख़िरी और मर्तबे में सब से पहली है, तो येह मेरी उम्मत कर दे। **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया : येह अह़मद (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत है। (دلائل النبوة لابی نعیم ص۳۳حدیث ۳۱, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 633)

किताबे ह़ज़रते मूसा में वस्फ़ हैं उन के — किताबे ईसा में उन के फ़साने आए हैं
उन्हीं की ना 'त के नग़मे ज़बूर से सुन लो — ज़बाने क़ुरआं पे उन के तराने आए हैं

(सामाने बख़्शिश, स. 125)

सब से पहले और सब से आख़िरी

﴾38﴿ **अल्लाह** पाक ने जब (ह़ज़रते) आदम (सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام) को पैदा फ़रमाया और इन्हें इन के बेटे दिखाए गए तो आप ने उन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलतो मर्तबे के ए'तिबार से देखा और उन सब के आख़िर में बुलन्द व रोशन नूर देखा तो **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** पाक ! येह कौन है ? फ़रमाया : येह तेरा बेटा "**अह़मद**" (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) है, येही अव्वल (या'नी पहला) है और येही **आख़िर** है और येही सब से पहला शफ़ीअ़ (या'नी शफ़ाअ़त करने वाला) और येही सब से पहला शफ़ाअ़त क़बूल किया गया। (دلائل النبوة للبیهقی ج۵ص۴۸۳، کنزالعمال ج۱۱ص۱۹۷حدیث۳۲۰۵۳, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 634)

ज़ात हुई इन्तिख़ाब वस्फ़ हुए ला जवाब
नाम हुवा मुस्तफ़ा तुम पे करोरों दुरूद

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

पहले और आख़िरी नबी

﴾39﴿ ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : (मे'राज की रात) **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आस्मानों पर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से मुलाक़ात फ़रमाई तो सब ने **अल्लाह** पाक की ह़म्द (या'नी ता'रीफ़) बयान की और आख़िर में सब से आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आप सब **अल्लाह** पाक की ता'रीफ़ बयान कर चुके, अब मैं बयान करता हूं : "सब ता'रीफ़ें **अल्लाह** पाक के लिये हैं जिस ने मुझे सारे जहान के लिये रह़मत बना कर भेजा और सब लोगों के लिये ख़ुश ख़बरी और डर सुनाने वाला बना कर भेजा और मुझ पर क़ुरआने करीम नाज़िल फ़रमाया जिस में हर शै का रोशन बयान है और मेरी उम्मत को बेहतर उम्मत बनाया उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुई, और इन्हीं को अव्वल और इन्हीं को आख़िर रखा और मेरे वासिते मेरा ज़िक्र बुलन्द फ़रमाया और मुझ से नुबुव्वत की इब्तिदा फ़रमाई और मुझ ही पर नुबुव्वत को ख़त्म फ़रमाया।" येह सुन कर ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से फ़रमाया : "इन बातों की वज्ह से मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तुम सब से अफ़्ज़ल हैं।" फिर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सिद्रतुल मुन्तहा पर तशरीफ़ ले गए। फिर **अल्लाह** पाक ने आप से कलाम फ़रमाया और येह भी फ़रमाया : मैं ने तुझे सब नबियों से पहले पैदा किया और सब के बा'द भेजा और तुझे फ़ातेह़ व ख़ातम (या'नी खोलने वाला और सब से आख़िरी) किया।

(تفسیر طبری ج۸ ص۹ تا ۱۱ حدیث ۲۲۰۲۱, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 637 मुख़्तसरन व मुल्तक़त़न)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

तुम हो अव्वल, तुम हो आख़िर, तुम हो बातिन, तुम हो ज़ाहिर
हक़ ने बख़्शे हैं येह अस्मा, صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْكَ وَسَلَّم

मेरे हुज़ूर के लब पर اَنَا لَهَا होगा

﴿40﴾ जब लोग तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام से शफ़ाअ़त के मुआ़मले में मायूस हो जाएंगे तो ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के पास ह़ाज़िर हो कर शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त पेश करेंगे, आप फ़रमाएंगे : मैं इस मन्सब का अह्ल नहीं, (ह़ज़रते) मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ातमुन्नबिय्यीन (या'नी सब नबियों में आख़िरी) हैं और यहां तशरीफ़ फ़रमा हैं। लोग मेरे हुज़ूर ह़ाज़िर हो कर शफ़ाअ़त चाहेंगे मैं फ़रमाऊंगा : "اَنَا لَهَا" या'नी में इस (काम) के लिये हूं।

(مسند ابو یعلی ج۲ص ۳٦۸ حدیث ۲۳۲٤, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 639 से ख़ुलासा)

कहेंगे और नबी "اِذْهَبُوْا اِلٰى غَيْرِىْ"
मेरे हुज़ूर के लब पर "اَنَا لَهَا" होगा

शर्ह़े कलामे ह़सन : रोज़े क़ियामत लोग नबियों की बारगाहों में शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त करेंगे तो सभी फ़रमाएंगे : "मेरे सिवा किसी और के पास जाओ।" जब हर त़रह़ से मायूस हो कर **अल्लाह** के सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में शफ़ाअ़त की भीक लेने ह़ाज़िर होंगे तो इर्शाद होगा : (हां हां) मैं इस काम के लिये हूं।

दे दे शफ़ाअ़त की मुझे ख़ैरात ख़ैर से रोज़े क़ियामत बख़्शवा, ऐ आख़िरी नबी

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

कुछ न छुपाया मगर..... (वाक़िआ़)

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते का'बुल अह़बार رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे

वालिद तौरैत शरीफ़ का इ़ल्म रखने वालों में सब से ज़ियादा इ़ल्म रखते थे, **अल्लाह** पाक ने जो कुछ ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल फ़रमाया, उस का इ़ल्म मेरे वालिद के बराबर किसी को न था, वोह अपने इ़ल्म में से मुझ से कुछ भी न छुपाते थे, जब उन का आख़िरी वक़्त आया तो मुझे बुला कर कहा : ऐ मेरे बेटे ! तुझे मा'लूम है कि मैं ने अपने इ़ल्म में से कोई चीज़ तुझ से न छुपाई, मगर हां दो सफ़ह़ात (SHEETS) रखे हैं, उन में एक नबी का बयान है जिन के तशरीफ़ लाने का ज़माना क़रीब आ पहुंचा है, मैं ने इस ख़ौफ़ से तुझे उन दो सफ़ह़ों की ख़बर न दी कि शायद कोई (नबी होने का झूटा दा'वा करने वाला) निकल खड़ा हो और तू उस के पीछे चल पड़े, येह त़ाक़ तेरे सामने है, मैं ने इस में वोह सफ़ह़ात (SHEETS) रख कर ऊपर से मिट्टी लगा दी है, अभी उन सफ़ह़ात को न देखना, जब वोह नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाएंगे और अगर **अल्लाह** पाक तेरा भला चाहेगा तो तू ख़ुद ही उन के पीछे चलने वाला बन जाएगा, येह कह कर वोह फ़ौत हो गए। हम उन के दफ़्न से फ़ारिग़ हुए तो मुझे उन सफ़ह़ात के देखने का शौक़ हर चीज़ से ज़ियादा था, मैं ने त़ाक़ खोला और सफ़ह़ात निकाले तो क्या देखता हूं कि उन में लिखा है : مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ خَاتَمُ النَّبِيِّنَ لَا نَبِيَّ بَعْدَهٗ مَوْلِدُهٗ بِمَكَّةَ وَمُهَاجَرُهٗ بِطَيْبَةَ या'नी मुह़म्मद **अल्लाह** के रसूल हैं, आख़िरी नबी हैं उन के बा'द कोई नबी नहीं, उन की पैदाइश मक्के में और वोह मदीने की त़रफ़ हिजरत करने वाले हैं।

(خصائص کبریٰ ج ۱ ص ۲۵)

वल्लाह ! ईमां है मेरा, ऐ आख़िरी नबी बा 'द आप के हरगिज़ न आएगा नबी नया

तू ख़्वाब में जल्वा दिखा, ऐ आख़िरी नबी है दस्त बस्ता सर झुका कर अ़र्ज़ सय्यिदी !

आ जा समा जा घर बना, ऐ आख़िरी नबी आलाइशों से पाक कर के मेरे दिल में तू

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सह़ाबा और ताबिईन के 5 इर्शादात

(1) दोनों कन्धों के दरमियान तह़रीर

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के दोनों कन्धों के दरमियान में लिखा हुवा है : ''مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ خَاتَمُ النَّبِيّٖن'' या'नी : मुह़म्मद **अल्लाह** के रसूल और **आख़िरी नबी** हैं ।

(مختصر تاریخ دمشق ج۲ ص۱۳۷, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 634)

(2) वोह जो न हों तो कुछ न हो

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ाज़िर हो कर ह़ुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह !** आप का रब इर्शाद फ़रमाता है : बेशक मैं ने तुम पर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को ख़त्म किया (या'नी तुम सब से आख़िरी नबी हो) और कोई ऐसा न बनाया जो तुम से ज़ियादा मेरे नज़्दीक इ़ज़्ज़त वाला हो, तुम्हारा नाम मैं ने अपने नाम से मिलाया कि जहां भी मेरा ज़िक्र किया जाए साथ ही साथ वहां तुम्हारा भी ज़िक्र किया जाए, बेशक मैं ने दुन्या और दुन्या वालों को इस लिये बनाया कि तुम्हारी इ़ज़्ज़त

और अपनी बारगाह में तुम्हारा मक़ामो मर्तबा उन पर ज़ाहिर करूं, और अगर तुम न होते तो मैं आस्मान व ज़मीन और जो कुछ इन में है बिल्कुल न बनाता ।

(مختصر تاریخ دمشق ج۲ص ۱۳۶، ۱۳۷ مختصراً, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 636)

है उन्हीं के दम क़दम की बाग़े आ़लम में बहार

वोह न थे आ़लम न था, गर वोह न हों आ़लम नहीं

अल्फ़ाज़ मआ़नी : दम क़दम से : वज्ह से । **बाग़े आ़लम :** दुन्या की रौनक़ें । **आ़लम :** दुन्या ।

शर्हे कलामे रज़ा : अल्लाह पाक के सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वज्ह से ही सारी दुन्या की रौनक़ें और बहारें हैं, अगर मेरे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या में तशरीफ़ न लाते तो न येह दुन्या होती और न इस दुन्या का वुजूद होता ।

ऐ कि तेरा वुजूद है, वज्हे क़रारे दो जहां

ऐ कि तेरी नुमूद है, ज़ीनते बज़्मे काएनात

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

(3) हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को पैग़ाम

ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते आ़मिर शअ़्बी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه कहते हैं : **अल्लाह** पाक ने (हज़रते) इब्राहीम (ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام) पर जो सहीफ़े[1] (या'नी

1 : "सहीफ़ा" लुग़त में उन अवराक़ को कहते हैं जिन पर कलामे इलाही लिखा हो, इस्तिलाह में वोह आस्मानी कलाम है जो रिसाले की शक्ल में नबियों पर आया ।

(नूरुल इ़रफ़ान, स. 977)

आस्मानी कलाम) नाज़िल फ़रमाए उन में येह भी था : बेशक तेरी औलाद में क़बाइल दर क़बाइल होंगे यहां तक कि नबिय्ये उम्मी (या'नी दुन्या में किसी से पढ़े बिग़ैर पढ़ने वाले नबी), ख़ातमुल अम्बिया (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तशरीफ़ लाएंगे। (الطبقات الکبریٰ لابن سعد ج ۱ ص ۱۳۰, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 635)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं :

ऐसा उम्मी किस लिये मिन्नत कशे उस्ताद हो

क्या किफ़ायत उस को اِقْرَاْ رَبُّكَ الْاَكْرَمُ नहीं

अल्फ़ाज़ मआ़नी : उम्मी : दुन्या में किसी से न पढ़े हुए। **मिन्नत कश :** एह़सान उठाने वाला। **किफ़ायत :** काफ़ी होना।

शर्ह़े कलामे रज़ा : अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** पाक ने ख़ुद पढ़ाया है जिस का ज़िक्र 30वें पारे की **सूरतुल अ़लक़** में मौजूद है, जब आप को ख़ुदाए पाक ने ख़ुद पढ़ाया है तो फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्यूं किसी दुन्यावी उस्ताद के एह़सान उठाएं। और आप का "**उम्मी**" होना बहुत बड़ा मो'जिज़ा है कि आप ने दुन्या में किसी से भी नहीं पढ़ा मगर आप को दुन्या के तमाम उ़लूम ह़ासिल हैं।

(4) ह़ज़रते अश्इ़या عَلَيْهِ السَّلَام को वह़ी

ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते वह़ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने अपने प्यारे नबी, ह़ज़रते अश्इ़या عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी भेजी कि मैं नबिय्ये उम्मी को भेजने वाला हूं, उस के सबब (या'नी

ज़रीए) बहरे कान और ग़ाफ़िल दिल और अन्धी आंखें खोल दूंगा, उस की पैदाइश मक्के में, हिजरत करने की जगह मदीना और उस की बादशाहत "**मुल्के शाम**" में है, मैं ज़रूर उस की उम्मत को सब उम्मतों से जो लोगों के लिये ज़ाहिर की गई बेहतर व अफ़्ज़ल करूंगा, मैं उन की किताब पर दूसरी किताबों को ख़त्म फ़रमाऊंगा और उन की शरीअ़त पर दूसरी शरीअ़तों और उन के दीन पर सब दीनों को मुकम्मल करूंगा। (دلائل النبوة لابی نعیم ص٣٦ حدیث٣٣، الخصائص الکبریٰ ج١ ص٢٣, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 635)

कलीमो नजी मसीहो सफ़ी ख़लीलो रज़ी रसूलो नबी
अ़तीक़ो वसी ग़निय्यो अ़ली सना की ज़बां तुम्हारे लिये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ على محمَّد

"मुल्के शाम की बादशाहत" की वज़ाह़त

ऐ आ़शिक़ाने आख़िरी नबी ! अभी जो ह़दीसे पाक बयान हुई इस में येह भी है कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बादशाहत "**मुल्के शाम**" में होगी, इस के मुतअ़ल्लिक़ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत को **फ़तावा रज़विय्या शरीफ़** से एक मदनी फूल पेश करता हूं : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रत अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللهُ عَنْه) तो अव्वल मुलूके इस्लाम (या'नी सल्त़नते मुह़म्मदिय्यह के पहले बादशाह) हैं इसी की त़रफ़ तौराते मुक़द्दस में इशारा है कि مَوْلِدُهٗ بِمَكَّةَ وَمُهَاجَرُهٗ طَيْبَةَ وَمُلْكُهٗ بِالشَّامِ

या'नी "वोह नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्के में पैदा होगा और मदीने को हिजरत फ़रमाएगा और उस की सल्त़नत शाम में होगी।" तो अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه) की बादशाही अगर्चे सल्त़नत है, मगर किस की ! **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 29, स. 357)

सब सह़ाबियात भी !	जन्नती जन्नती	हर सह़ाबिये नबी !	जन्नती जन्नती
ह़ज़रते सिद्दीक़ भी	जन्नती जन्नती	चार याराने नबी	जन्नती जन्नती
उ़स्माने ग़नी	जन्नती जन्नती	और उ़मर फ़ारूक़ भी	जन्नती जन्नती
हैं ह़सन हुसैन भी	जन्नती जन्नती	फ़ाति़मा और अ़ली	जन्नती जन्नती
हर ज़ौजए नबी	जन्नती जन्नती	वालिदैने नबी	जन्नती जन्नती
हैं मुआ़विया भी	जन्नती जन्नती	और अबू सुफ़्यान भी	जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

(5) ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام को वह़ी

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी भेजी : मैं तेरी औलाद से बादशाहों और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को भेजता रहूंगा यहां तक कि मैं इस ह़रमे मोह़्तरम वाले नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भेजूंगा जिस की उम्मत बैतुल मुक़द्दस बुलन्द ता'मीर करेगी और वोह **"आख़िरी नबी"** है और उस का नाम **"अह़मद"** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है।

(الطبقات الكبرى لابن سعد ج ١ ص ١٢٩, फ़तावा रज़विय्या, जि. 15, स. 635)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

ख़त्मे नुबुव्वत के मुतअ़ल्लिक़ ना'रे

मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा सब से आख़िरी नबी
आमिना का लाडला सब से आख़िरी नबी
ताजदारे अम्बिया सब से आख़िरी नबी
हैं शफ़ीउ़ल वरा सब से आख़िरी नबी
ए'तिक़ादे फ़ातिमा सब से आख़िरी नबी
अ़क़ीदा सब सह़ाबा का सब से आख़िरी नबी
अ़क़ीदा ग़ौसे पाक का सब से आख़िरी नबी
शैख़ो शाब ने कहा सब से आख़िरी नबी
है अ़क़ीदए रज़ा, सब से आख़िरी नबी

अह़मदे मुज्तबा सब से आख़िरी नबी
शाहे हर दो सरा सब से आख़िरी नबी
हैं ह़बीबे किब्रिया सब से आख़िरी नबी
आ़सियों का आसरा सब से आख़िरी नबी
है यक़ीने आ़इशा सब से आख़िरी नबी
अ़क़ीदा अहले बैत का सब से आख़िरी नबी
औलिया ने भी कहा सब से आख़िरी नबी
बच्चा बच्चा बोल उठा सब से आख़िरी नबी
ना'रा है अ़त्तार का, सब से आख़िरी नबी

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

17 रबीउ़ल अव्वल 1444 सि.हि.
14-10-2022

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक्तबतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घरों में ह़स्बे तौफ़ीक़ रिसाले या मदनी फूलों के पेम्फ़लेट हर माह पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

मआख़िज़ो मराजेअ़

کتاب	مطبوعہ
قرآنِ مجید	
کنزالعرفان	مکتبۃ المدینہ
تفسیرطبری	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تاویلات اہل السنۃ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تفسیرخزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ
صراط الجنان	مکتبۃ المدینہ
بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مسلم	دارالکتاب العربی بیروت
ابوداود	داراحیاء التراث العربی بیروت
ترمذی	دارالفکر بیروت
ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت
دارمی	دارالکتاب العربی بیروت
مسنداحمد	دارالفکر بیروت
معجم کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت
معجم اوسط	دارالکتب العلمیۃ بیروت
معجم صغیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مسند شامیین	مؤسسۃ الرسالۃ بیروت
مستدرک	دارالمعرفۃ بیروت
مسندابویعلی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الفردوس بمأثور الخطاب	دارالکتب العلمیۃ بیروت
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	دارالکتب العلمیۃ بیروت
السنۃ	دارابن حزم بیروت
الاوائل	دارالفرقان بیروت

کتاب	مطبوعہ
ذکرالموت	المکتبۃ العصریۃ بیروت
کنزالعمال	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الاستذکار	داراحیاء التراث العربی بیروت
شرح مسلم	دارالکتب العلمیۃ بیروت
اشعۃ اللمعات	
نزہۃ القاری	
مراٰۃ	
شمائل ترمذی	داراحیاء التراث العربی بیروت
دلائل النبوۃ للبیہقی	دارالکتب العلمیۃ بیروت
دلائل النبوۃ لابی نعیم	المکتبۃ العصریۃ بیروت
خصائص کبریٰ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
شرح شفا	دارالکتب العلمیۃ بیروت
شانِ حبیب الرحمٰن	
طبقات کبریٰ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
تاریخ بغداد	دارالکتب العلمیۃ بیروت
ابن عساکر	دارالفکر بیروت
مختصر تاریخ دمشق	دارالفکر بیروت
الکامل	دارالکتب العلمیۃ بیروت
فتاوٰی عالمگیری	دارالفکر بیروت
فتاوٰی رضویہ	رضافاؤنڈیشن
شرح الصدور (اردو)	مکتبۃ المدینہ
منتخب حدیثیں	مکتبۃ المدینہ
حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ
الملفوظ	مکتبۃ المدینہ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	ईमान की फ़िक्र न करना तश्वीश नाक है	11
ह़ज़रते जिब्रील सलाम कहते हैं (वाक़िआ़)	1	सुब्ह़ मोमिन तो शाम को काफ़िर	11
اَلْحَمْدُ لِلّٰه हम आख़िरी नबी के उम्मती हैं	3	एक ग़ैबी बुज़ुर्ग का अनोखा वाक़िआ़	13
अहम तरीन फ़र्ज़	3	ईमान अफ़्रोज़ मौत (मदनी बहार)	16
ख़ातम का मत़लब	5	40 ह़दीसें पहुंचाने की फ़ज़ीलत	18
जानवर भी आख़िरी नबी मानते हैं (वाक़िआ़)	5	ख़त्मे नुबुव्वत के बारे में 40 ह़दीसें	19
		नूरानी महल की आख़िरी ईंट	19
अ़क़ीदए ख़त्मे नुबुव्वत की अहम्मिय्यत	7	ख़ातमुन्नबिय्यीन के मा'ना	21
कोई दलील नहीं मांगी जाएगी	8	छे फ़ज़ीलतें	21
झूटे नबी से मो'जिज़ा त़लब करना कैसा ?	8	मैं आ़क़िब हूं	22
		सारे नबियों के सरदार	23
لَا نَبِیَّ بَعْدِیْ	9	ख़ातमुन्नबिय्यीन	23
ईमान की सलामती की फ़िक्र न करने का नुक़्सान	10	आख़िरुल मसाजिद के मा'ना	24
		जन्नत में दाख़िल हो जाओ	24

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابو یعلی)

उ़न्वान	सफ़ह़ा
मेरे बा'द हरगिज़ कोई नबी नहीं	24
सब से पहले जन्नत में जाने वाली उम्मत	26
ख़ूबियों भरी मुख़्तसर बात	26
सब नबियों से अफ़्ज़ल होने का सबब (वाक़िआ़)	27
30 झूटे नबी होंगे	28
शर्हे ह़दीस	28
मौला अ़ली की शाने अ़ज़मत निशान	29
तू ने सच कहा	31
एक ख़्वाब की ता'बीर	31
उन के आगे नूर दौड़ता होगा	31
क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ आख़िरी नबी कहेगी	32
अगर मुह़म्मद न होते तो मैं तुम्हें न बनाता	32
तौरैत शरीफ़ में ज़िक्रे ख़ैर	34

उ़न्वान	सफ़ह़ा
सब से पहले और सब से आख़िरी	34
पहले और आख़िरी नबी	35
मेरे हुज़ूर के लब पर اَنَا لَهَا होगा	36
कुछ न छुपाया मगर..... (वाक़िआ़)	36
सह़ाबा और ताबिईन के 5 इर्शादात	38
(1) दोनों कन्धों के दरमियान तह़रीर	38
(2) वोह जो न हों तो कुछ न हो	38
(3) ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को पैग़ाम	39
(4) ह़ज़रते अश्इ़या عَلَيْهِ السَّلَام को वह़ी	40
"मुल्के शाम की बादशाहत" की वज़ाह़त	41
(5) ह़ज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام को वह़ी	42
ख़त्मे नुबुव्वत के मुतअ़ल्लिक़ ना'रे	43